Date - 09/05/2020.
F - II.

* सामान्य शिक्षा में नाटक की भूमिका :-

शिक्षा में नाट्य प्रयोग के अन्तर्गत एक संस्था की शैक्षिक वातावरण एवं व्यवस्था में रहकर ही युवा वर्ग के लिए नाटक प्रस्तुत करने पड़ते हैं। इसके अन्तर्गत परस्पर संवाद एवं प्रदर्शन दोनों ही आवश्यकता है।

लियान होरे (Lynn Hoare) :- का कथन है कि शिक्षा के क्षेत्र में नाटक अत्यंत उपयोगी है। नाटकीय तत्व, जिसके साथ परस्पर संवाद शामिल हो और जिसमें दर्शकों की भी भागीदारी हो (चाहे वे भूमिका निभाएँ या न निभाएं) कलाकार और अध्यापक के सामूहिक कार्य के रूप में शैक्षिक या सामाजिक लक्ष्य को पाने में सफल होते हैं। निश्चय ही नाटक के विभिन्न आवश्यक अंग इसमें महती भूमिका निभाते हैं।

हेलेन निकोल्सन (Helen Nicholson) :- का कथन है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य में व्यवसायिक नाट्यकर्मी एवं नाट्य निर्माता युवा लोगों के साथ काम करते हैं। इस दौरान, इस प्रकार के शिक्षा व्यवस्था एवं वातावरण (जिसमें स्कूल, चिकित्सालय, नाट्य मंच, संग्राहलय, और पुरातत्व स्थल शामिल हैं) का उन्हें अनुभव हो जाता है और उसके बारे में पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। तात्कालिक संसार के वातावरण से जुड़ी हर परिस्थिति (उदाहरणार्थ डेटिंग, हिंसा, पर्यावरण संरक्षण, द्वन्द के संदर्भ में इस विधि से विद्यार्थी को शिक्षित करने में पर्याप्त सफलता मिलती है।

निश्चित रूप से जो नाट्य संस्था इस क्षेत्र में कदम रखती है उसे पर्याप्त अनुभवी एवं सिद्धहस्थ होना चाहिए क्योंकि युवा एवं किशोरों के साथ उन्हें काम करना पड़ता है और ऐसे में विशेष सावधानी आवश्यक है।

Scanned with CamScanner